Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

भारतीय मुस्लिम समाज: धार्मिक विश्वास, जातीय संरचना और सामाजिक जीवन

ताहिरा बेगम
tahirabegum949@gmail.com

शोध सार

यह शोध पत्र भारतीय मुस्लिम समाज की धार्मिक, जातीय, और सामाजिक संरचना का ऐतिहासिक और वर्तमान संदर्भ में विश्लेषण करता है। अध्ययन में इस्लाम धर्म की उत्पत्ति, उसके भारत में प्रवेश, और विभिन्न धार्मिक मान्यताओं के सामाजिक जीवन पर प्रभाव को विस्तार से समझाया गया है। इसके अंतर्गत, भारतीय मुस्लिम समाज में मौजूद जातीय विभाजन–अशराफ, अजलाफ, और अरजाल–के साथ-साथ समाज की वर्गीय संरचना पर भी विचार किया गया है। यह शोध मुस्लिम समाज में जातीय समानता और भेदभाव के बीच के अंतर्विरोधों को रेखांकित करता है। इसके अलावा, इस्लामी धार्मिक विश्वासों के पांच प्रमुख स्तंभों–कलमा, नमाज, रोजा, जकात, और हज–का सामाजिक और धार्मिक महत्व भी वर्णित किया गया है। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय मुस्लिम समाज में आए सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का भी विश्लेषण किया गया है। यह शोध पत्र समाज में व्याप्त समस्याओं को दूर करने के संभावित समाधान प्रस्तुत करता है और भारतीय मुस्लिम समाज के सुधार के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द: भारतीय मुस्लिम समाज, जातीय संरचना, धार्मिक विश्वास, सामाजिक विभाजन, इस्लामिक प्रथाएँ।

परिचय

भारतीय मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन एक जटिल और बहुआयामी विषय है, जो ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ा हुआ है। यह अध्ययन इस बात को उजागर करने का प्रयास करेगा कि इस्लाम धर्म के आगमन के साथ-साथ भारतीय मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति में क्या बदलाव आया, और कैसे ये बदलाव सामाजिक संरचना, धार्मिक मान्यताओं, और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से उभरे।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति का विकास ऐतिहासिक कालक्रम से जुड़ा हुआ है, जहाँ इस्लाम के उदय के साथ ही महिलाओं को सामाजिक, धार्मिक और कानूनी रूप से विभिन्न अधिकार प्रदान किए गए थे। इसके बावजूद, भारतीय समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति में कई भिन्नताएँ और असमानताएँ दिखाई देती हैं, जो पारंपरिक प्रथाओं, सामाजिक मान्यताओं, और जाति-आधारित विभाजन के कारण उत्पन्न हुई हैं।

यह अध्ययन इस्लामी सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के अधिकार, उनके सामाजिक योगदान, और भारतीय समाज में महिलाओं की वर्तमान स्थिति को समझने का प्रयास करेगा। यह शोध इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करेगा कि किस प्रकार से ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक सुधार आंदोलनों, और महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव ने उनके जीवन पर प्रभाव डाला।

इस शोध का उद्देश्य भारतीय मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति को गहनता से समझना और उसमें सुधार के लिए सुझाव देना है, ताकि समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

इस्लाम धर्म और भारतीय मुस्लिम समाज का संबंध:

इस्लाम और भारतीय मुस्लिम समाज का संबंध गहराई से जुड़ा हुआ है। 'इस्लाम', 'सलाम', और 'मुस्लिम' जैसे शब्द अरबी भाषा से उत्पन्न हुए हैं, जिनकी धातु 'सिल्म' से ली गई है। 'सिल्म' का अर्थ है 'आत्मसमर्पण' या 'प्रस्तुत करना', इसलिए इस्लाम धर्म को यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि इसका पालन करने वाले लोग अल्लाह के आदेशों का पूर्णतः पालन करते हैं।

इस्लाम के अनुयायी को 'मोमिन' या 'मुस्लिम' कहा जाता है, जिसका मतलब है वह व्यक्ति जो खुदा के सामने पूरी तरह से आत्मसमर्पण करता है, जैसा कि कुरान और सुन्ना में कहा गया है। इस्लाम के मूल सिद्धांतों में यह माना जाता है कि केवल 'अल्लाह' की पूजा की जानी चाहिए और मोहम्मद साहब उनके रसूल हैं। भारत में मुसलमान दो प्रकार के होते हैं–पहले वे, जो मुस्लिम धर्म का पालन करते हैं, और दूसरे वे, जिन्होंने अपने पुराने धर्म को छोड़कर इस्लाम अपनाया है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

इस्लाम का विकास और उदय एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी, जिसमें सामाजिक परिस्थितियों ने इसकी उत्पत्ति को प्रभावित किया। इस्लाम का जन्म अरब में हुआ, जो एक महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में इस्लाम के आगमन से पहले की स्थिति बहुत दयनीय थी। उस समय वहां कोई संगठित सामाजिक या राजनीतिक व्यवस्था नहीं थी, और समाज मूर्तिपूजा और पिछड़ी हुई जीवनशैली में बंटा हुआ था।

570 ई. में मक्का में मोहम्मद साहब का जन्म हुआ। 906 ई. में उन्होंने एक नए धर्म का प्रचार शुरू किया, जिसका उद्देश्य सामाजिक असमानता और धार्मिक भेदभाव को समाप्त करना, विभिन्न कबीलों को एकजुट करना, और मानवता को एक निराकार अल्लाह की पूजा करना सिखाना था। इस्लाम का प्रसार मुख्यतः प्रेम, समर्पण, और समानता के संदेश के माध्यम से हुआ।

भारत में इस्लाम के प्रारंभिक प्रसार का श्रेय व्यापारिक और शांतिपूर्ण संपर्कों को दिया जाता है। हालांकि, बाद में मोहम्मद बिन कासिम और महमूद गजनवी जैसे आक्रमणकारियों ने भी इसके प्रसार में योगदान दिया। भारत में मुस्लिम शासन के दौरान, इस्लामिक विचारधारा और हिंदू समाज का एकीकरण हुआ, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और धार्मिक विचारों का सम्मिश्रण हुआ।

भारत में इस्लाम के प्रभाव ने स्थानीय रीति-रिवाजों, मान्यताओं, और सामाजिक प्रथाओं को आत्मसात किया। इस प्रक्रिया ने भारतीय इस्लाम को अरबी इस्लाम से अलग बना दिया। भारतीय मुस्लिम समाज में जाति प्रथा की उपस्थिति यह दर्शाती है कि इस्लाम ने भारतीय समाज की संरचना को स्वीकार कर लिया और इसे अपने अनुसार ढालने का प्रयास किया।

भारतीय मुस्लिम समाज की संरचना और प्रकृति

भारतीय मुस्लिम समाज मुख्य रूप से सुन्नी और शिया समुदायों में विभाजित है, जिनके बीच धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। इसके अलावा, मोताजिला नामक एक छोटा सम्प्रदाय भी है, जिसके अनुयायी बहुत कम हैं। यह धार्मिक विभाजन हजरत मुहम्मद की मृत्यु के बाद उभरा, जब इस्लाम के उत्तराधिकार के मुद्दे पर मतभेद शुरू हुए। हजरत मुहम्मद ने स्वयं को अंतिम पैगंबर घोषित किया था, जिसके बाद उत्तराधिकारी को लेकर विवाद हुआ। एक वर्ग का मानना था कि हजरत मुहम्मद ने अपने

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

जीवनकाल में ही अपने दामाद और चचेरे भाई अली को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था, जबकि अन्य ने चुनाव के माध्यम से खलीफा के चयन की मांग की।

हजरत मुहम्मद की बीमारी के समय अबू बकर ने नमाज का नेतृत्व किया था, इसलिए एक वर्ग का मानना था कि उन्हें पहला खलीफा बनना चाहिए। अबू बकर के बाद क्रमशः उमर, उस्मान, और फिर अली खलीफा बने। इन विभाजनों और उत्तराधिकार विवादों ने इस्लाम को शिया और सुन्नी में विभाजित कर दिया। शिया समुदाय का मानना है कि अली और उनके वंशज ही सही खलीफा हैं, जबकि सुन्नी समुदाय उस्मान के वंशजों को मान्यता देते हैं।

भारत में सुन्नी समुदाय हनफी विचारधारा का पालन करता है, जो भारतीय मुस्लिमों का सबसे बड़ा समूह है। हालांकि, दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों जैसे मलबार और लक्षद्वीप में शाफ़ी विचारधारा का प्रभाव है, जबकि गुजरात में मालिकी विचारधारा पाई जाती है। शिया समुदाय इमामी विचारधारा का अनुसरण करता है, जिसमें वे बारह इमामों या सात इमामों के अनुयायी होते हैं।

भारतीय मुस्लिम समाज में चिश्ती, सुहरवर्दी, शत्तारी, कादिरी, और नक्शबंदी जैसे सूफी सम्प्रदाय भी मौजूद हैं। ये सम्प्रदाय इस्लाम की शिक्षाओं को प्रेम, समानता, और आध्यात्मिकता के माध्यम से फैलाते हैं। इस्लाम के विभिन्न सम्प्रदायों के अनुयायों के आचार-व्यवहार में अंतर देखा जा सकता है। जहां एक ओर सुन्नी और शिया समुदाय एक-दूसरे को मूर्तिपूजक कहकर संबोधित करते हैं, वहीं सूफी सम्प्रदाय के अनुयायी खुदा और पैगंबर के बीच किसी को मध्यस्थ नहीं मानते।

मुस्लिम समाज भौगोलिक दृष्टि से भी विभाजित है, जैसे कि ख्वारिजी, काफ़ी, खुरासानी, ईरानी, तूरानी, समरकंदी, बुखारी, बंगाली, गुजराती, दक्खिनी, मुलतानी, और सिंधी। भारतीय परिवेश में इस्लाम ने विभिन्न रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक मान्यताओं को अपनाया है। इस प्रक्रिया में इस्लाम ने जाति प्रथा को भी स्वीकार किया है, जिसके कारण भारतीय मुस्लिम समाज में भी सामाजिक स्तरीकरण और भेदभाव देखा जाता है।

मुस्लिम समाज के सिद्धांत में समानता (मसावत) का महत्व है, जहां ऊंच-नीच का विचार नहीं होता। हालांकि, व्यवहारिक रूप से भारतीय मुस्लिम समाज में जातीय और सामाजिक विभाजन मौजूद है। के.एम. अशरफ ने अपनी रचना में लिखा है कि दलित जातियों ने समानता

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

की तलाश में इस्लाम को अपनाया, फिर भी वे मुस्लिम समाज में जातीय स्तर पर उसी स्थिति में रहे जैसे हिंदू समाज में थे।

इस्लामिक समाज की संरचना जातीय और सामाजिक वर्गों में विभाजित है। जाति प्रथा व्यक्ति के जन्म के आधार पर निर्धारित होती है, जबकि वर्ग आर्थिक स्थिति पर आधारित होता है। वर्ग खुला होता है और व्यक्ति की संपत्ति या पेशे के आधार पर परिभाषित होता है, जबकि जाति एक निश्चित सामाजिक पहचान पर आधारित होती है, जिसे बदलना मुश्किल होता है।

भारतीय मुस्लिम समाज में तीन प्रमुख वर्ग देखे जा सकते हैं:

1. **अशराफ**: यह उच्च वर्ग है, जिसमें विदेशी मूल के मुस्लिम (अरब, पर्शिया, तुर्की, या अफगानिस्तान से आए) और स्वर्ण हिंदू शामिल होते हैं, जिन्होंने इस्लाम अपनाया। इसमें सैय्यद, शेख, मुग़ल, और पठान जैसी जातियाँ आती हैं।
2. **अजलाफ**: यह एक निम्न वर्ग है, जिसमें हिंदू समाज की नीची जातियों से धर्म परिवर्तन करके बने मुस्लिम शामिल हैं। इसमें पेशेवर जातियाँ जैसे जुलाहा, हज्जाम, धुनिया, कसाब, गद्दी, और मनहार शामिल हैं।
3. **अरजाल**: यह सबसे निचला वर्ग है, जिसमें हलाखोर, लालबेगी, अब्दाल, और बेदिया जातियाँ आती हैं। इन्हें मुस्लिम समाज में सबसे निचला दर्जा दिया गया है और इन्हें मस्जिदों या दफनगाहों में जाने की अनुमति नहीं है।

मुस्लिम समाज में जातीय विभाजन प्राचीन समय से चला आ रहा है, हालांकि छुआछूत जैसी धारणाएँ अपेक्षाकृत कमजोर हैं। उच्च स्थान प्राप्त सैयद भी ब्राह्मणों की तरह विशेषाधिकार प्राप्त नहीं कर सकते। भारतीय समाज में सामंतवाद के पतन और पूंजीवाद के विकास के साथ, मुस्लिम सामंतों की स्थिति भी बदल गई। ब्रिटिश शासन के दौरान, जमींदारी व्यवस्था का उदय हुआ, जिसने वर्गीय विभाजन को और मजबूत किया।

भारत में मुस्लिम मध्यम वर्ग का उदय 1857 के बाद शुरू हुआ, जब विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। आजादी के बाद, भारतीय मुस्लिम समाज में मध्यवर्ग का विकास हुआ, हालांकि शिक्षा और सामाजिक सम्मान की कमी के कारण यह वर्ग पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाया।

मुस्लिम समाज की सामाजिक संरचना का गहराई से विश्लेषण

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

मुस्लिम समाज में जाति और वर्ग के अंतर को पहचानने के लिए यह आवश्यक है कि हम जातीय प्रथाओं और सामाजिक मान्यताओं को बेहतर ढंग से समझें। जबकि इस्लाम सिद्धांत रूप में समानता की बात करता है, व्यवहारिक रूप में भारतीय मुस्लिम समाज में सामाजिक स्तरीकरण काफी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कई सामाजिक वैज्ञानिकों ने यह बताया है कि भारतीय मुस्लिम समाज में जाति प्रथा ने अपना एक स्थायी स्थान बना लिया है।

मुस्लिम समाज में जाति संरचना को हिंदू जाति प्रथा के समान ही देखा जाता है, लेकिन यह विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं को भी अपनाता है। यह समाज भी अलग-अलग वर्गों में विभाजित होता है, जो उनके पेशे, आर्थिक स्थिति, और सामाजिक रुतबे के आधार पर निर्धारित होते हैं।

जाति और वर्ग का अंतर

जाति और वर्ग के बीच अंतर को समझना महत्वपूर्ण है।

- **जाति**: यह व्यक्ति के जन्म से निर्धारित होती है, और समाज में ऊंच-नीच की भावना के आधार पर विकसित होती है। यह एक स्थायी पहचान है, जिसे परिवर्तन करना बहुत कठिन है।
- **वर्ग**: यह आर्थिक स्थिति पर आधारित है, जिसमें परिवर्तन संभव है। वर्ग का स्वरूप खुला होता है, जहां व्यक्ति अपने पेशे या संपत्ति के आधार पर ऊपर उठ सकता है या नीचे जा सकता है।

इस्लाम के आने के बाद भी, भारतीय मुस्लिम समाज में जाति व्यवस्था की प्राचीन परंपराएँ बनी रहीं। जब भारतीय समाज ने इस्लाम को अपनाया, तब भी हिंदूवादी जातीयता और सामाजिक अलगाव की भावना जारी रही। इस्लामिक मान्यताओं को अपनाने के बावजूद, जाति व्यवस्था की संरचना में परिवर्तन आंशिक रूप से ही हुआ।

विभिन्न मुस्लिम वर्ग और उनका सामाजिक स्थान

भारतीय मुस्लिम समाज में सामाजिक विभाजन की प्रक्रिया सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

1. **उच्च वर्ग (अशराफ)**: इस वर्ग के लोग विदेशी मूल के माने जाते हैं और उनका उच्च सामाजिक दर्जा होता है। ये आमतौर पर धार्मिक, प्रशासनिक, और राजनीतिक पदों पर रहते हैं। सैय्यद, शेख, मुग़ल, और पठान जैसे उपवर्ग इस श्रेणी में आते हैं।

2. **मध्यम वर्ग (मध्यमवर्गीय मुस्लिम)**: इस वर्ग में व्यापारी, शिक्षक, सरकारी कर्मचारी, वैद्य, कवि, आदि शामिल होते हैं। यह वर्ग आमतौर पर शहरी क्षेत्रों में केंद्रित होता है, जहां वे अपनी सामाजिक स्थिति और आर्थिक परिस्थितियों में सुधार की कोशिश करते हैं। स्वतंत्रता के बाद, इस वर्ग का विस्तार हुआ है, लेकिन यह अभी भी शिक्षा और रोजगार के क्षेत्रों में सीमित है।

3. **निम्न वर्ग (अजलाफ और अरजाल)**: यह वर्ग उन पेशेवर जातियों से बना है, जिन्होंने धर्म परिवर्तन किया। इन पेशों में बुनकर, हज्जाम, दर्जी, कसाब, गद्दी, और मनहार जैसी जातियाँ शामिल हैं। अरजाल, जो समाज का सबसे निचला स्तर है, उन जातियों को समाहित करता है, जिन्हें अछूत माना जाता है। ये जातियाँ आमतौर पर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में केंद्रित होती हैं, जहां वे सामाजिक उपेक्षा का सामना करती हैं।

भारतीय मुस्लिम समाज में आर्थिक और सामाजिक असमानता

भारतीय मुस्लिम समाज में आर्थिक और सामाजिक असमानता का एक लंबा इतिहास रहा है। ब्रिटिश शासन के दौरान, जमींदारी प्रथा का उदय हुआ, जिसने सामाजिक विभाजन को और अधिक मजबूत किया। यह व्यवस्था मुख्यतः भूमिहीन किसानों, मजदूरों, और कारीगरों के शोषण पर आधारित थी, जो बाद में आजादी के बाद भी जारी रही।

ब्रिटिश शासन के तहत, भारतीय अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन हुए, जिनके परिणामस्वरूप सामाजिक वर्गों का उभरना और जमींदारी व्यवस्था का पतन हुआ। इससे कृषि, उद्योग, और व्यापार के क्षेत्रों में नए अवसर उत्पन्न हुए, लेकिन मुस्लिम समाज का अधिकांश वर्ग उन अवसरों से वंचित रहा।

स्वतंत्रता के बाद के परिवर्तन

स्वतंत्रता के बाद भारतीय मुस्लिम समाज में जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी गई, जिससे भूमि सुधार की प्रक्रिया शुरू हुई। हालांकि, मुस्लिम किसानों और श्रमिकों की स्थिति में बड़े पैमाने

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

पर सुधार नहीं हो पाया। हरित क्रांति के बावजूद, मुस्लिम किसानों का कृषि क्षेत्र में पिछड़ापन बरकरार रहा।

कृषि में असफलता और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण, मुस्लिम समाज के निम्न और मध्यम वर्ग के लोग शहरों की ओर पलायन करने लगे। यहां वे लघु उद्योगों और अनौपचारिक क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में आते हैं। कारीगरों, मजदूरों, और बुनकरों का बड़ा वर्ग आज भी शहरी क्षेत्रों में अपनी जीविका के लिए संघर्ष कर रहा है।

मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज का उदय

भारतीय मुस्लिम समाज में मध्यवर्गीय वर्ग का विकास ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू हुआ, जब शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़े। स्वतंत्रता के बाद, यह वर्ग धीरे-धीरे विस्तारित हुआ। सैयद अहमद खान के प्रयासों से मुस्लिम समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी, लेकिन शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण यह वर्ग अभी भी पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाया है।

आजादी के बाद के वर्षों में, भारतीय मुस्लिम समाज में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। हालांकि, मुस्लिम समाज का एक बड़ा हिस्सा अभी भी सामाजिक भेदभाव, गरीबी, और अशिक्षा से जूझ रहा है।

समाज के भीतर उत्पन्न आंतरिक संघर्ष और समाधान की दिशा

भारतीय मुस्लिम समाज में आंतरिक विभाजन, जातीय भेदभाव, और सामाजिक असमानता के कारण उत्पन्न संघर्षों को समझना आवश्यक है। समानता और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि सामाजिक सुधार के प्रयास किए जाएं, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसरों पर केंद्रित हों।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी विश्व कोश - 17, पृ. 131
2. संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिंह दिनकर, पृ. 226
3. ग्लोबल इस्लामिक पोलटिक्स - मीर जौहर हुसैन, पृ. 1
4. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इस्लाम, पृ.

ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-1, Sep-2023, Page 34-42

5. इस्लाम की ऐतिहासिक भूमिका - एम. एन. राय, पृ. 24
6. मध्यकालीन भारत - सतीश चंद्र, पृ. 5
7. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति - एस. आविद हुसैन, पृ. 61
8. भारत की राष्ट्रीय संस्कृति - एस. आबिद हुसैन, पृ. 74
9. धर्म के नाम पर - गीतेश शर्मा, पृ. 65
10. भारतीय चिंतन परम्परा - के. दामोदरन, पृ. 289
11. भारतीय चिंतन परम्परा - के. दामोदरन, पृ. 290
12. भारतीय चिंतन परम्परा - के. दामोदरन, पृ. 292
13. भारतीय समाज - श्यामाचरण दुबे, पृ. 18
14. भारतीय समाज - श्यामाचरण दुबे, पृ. 19
15. भारतीय समाज - श्यामाचरण दुबे, पृ. 20
16. भारत में राजनीति - रजनी कोठारी, पृ. 62
17. ए हिंदी ऑफ यूरोप - एच. ए. एल. फिशर, पृ. 138
18. भारत में अंग्रेजी राज - सुन्दरलाल (प्रथम खण्ड), पृ. 37